International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 01-11-2021, Accepted: 17-11-2021, Published: 02-12-2021
Volume 7; Issue 6; 2021; Page No. 47-57

वर्तमान युग में मुरझाते शाश्वत मूल्य

नीलिमा[1], डॉ. बृजलता शर्मा[2]

[1] शोद्यार्थी, हिन्दी विभाग, हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, धैड गाॉव, शिवनगर, पोखरा, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड, भारत

[2] प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, धैड गाॉव, शिवनगर,पोखरा, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड, भारत।

सारांश

सशक्त दार्शनिक दृष्टि, क्रियात्मक सामाजिक जीवन, मूल्योंपरक चेतना तथा वैयक्तिक सदाचार-परायण जीवन, इन तीन मुख्य आधारभूत आयामों के द्वारा व्यक्ति जीवन मूल्यों के आदर्श को प्रस्तुत करने में सफल हो सकता है। परंतु वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों का संकट कुछ इस तरीके से गहराता जा रहा है कि उचित-अनुचित के बीच अंतर कर पाना बहुत ही कठिन जान पड़ता है । यह कठिन समस्या जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में देखने को मिलती है। उदाहरण के तौर पर धार्मिक-सांस्कृतिक व शिक्षा-संस्थानों को ही यदि हम देखें तो अतिसुक्ष्मता से चिंतन करने पर यह पाते हैं कि प्राचीनकाल में शिक्षण संस्थाओं व धार्मिक संस्थाओं को समाज में जीवन मूल्य को स्थापित करने का मुख्य आधार-तंत्र माना जाता था। वहीं आज इस बदलते परिवेश में शिक्षण संस्थान एंव धार्मिक संस्थाएं राजनीति के अखाड़े के रूप में वोट-बैंक तैयार कर रही है या फिर व्यवसायिक संस्थाएं बनती जा रही है । कोई भी धार्मिक संस्था अपने नाम से ही मनुष्य की जरूरत की वस्तुओं को बाजार में क्रय-विक्रय करने का कार्य बड़े जोरों-शोरों से करती है। अतः यह परिवर्तन इस समाज के वर्तमान चेहरे को प्रदर्शित कर रहा है।

मूल शब्द: शाश्वत जीवन मूल्य, श्रीमद्भागवत गीता, वर्तमान युग, जीवन-दर्शन, आचरण, शिक्षा- प्रभाव, समाज।

प्रस्तावना

भारतीय जीवन मूल्यों में सबसे महत्वपूर्ण तत्त्व है, वैयक्तिक उदात्तता या दूसरे शब्दों में कहें तो महान चरित्र। महर्षि मनु द्वारा जो धर्म के दस लक्षण बताए गए हैं, वास्तव में वही सब तो भारतीय सदाचार के जीवन मूल्य हैं -- धर्म, क्षमा, संयम, अस्तेय, पवित्रता, इंद्रिय-निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य व अक्रोध। इन लक्षणों को अपने चरित्र में अंगीकार करके ही मनुष्य अपने व्यक्तित्त्व को नैतिक मूल्यों सेअलौकिक कर मूलभूत दुर्गुणों (काम, क्रोध, लोभ, मोह) से बच सकता है।

शाश्वत जीवन मूल्य क्षरण के कारण और निवारण

जाॅन जे.काने -- 'मूल्य वे आदर्श विश्वास या मानक हैं, जिन्हें समाज या समाज के अधिकांश सदस्य ग्रहण किए हुए होते हैं।'

वास्तविकता तो यह है कि आज चरित्र-पतन की ऐसी भयावह स्थिति उत्पन्न हो चुकी है कि देश के भविष्य अर्थात युवा-शक्ति के समक्ष कोई अनुकरणीय आदर्श ही नहीं रह गया है। अगर कोई आदर्श है भी तो उसे समाज में बहुत ही देर के वरीयता दी जाती है; साथ ही उसकी हालत इतनी दयनीय होती है कि उसके साथ सभी को सहानुभूति तो होती है, परंतु उस मार्ग का अनुकरण करने का साहस हर किसी में नहीं होता। इस प्रकार स्पष्ट है कि मानव मूल्य एक ऐसी आचार संहिता या गुणों का समूह है जिसे मनुष्य अपने संस्कारों तथा वातावरण के आपसी माहौल के माध्यम से अपना कर अपने पूर्व निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन शैली का स्वयं ही निर्माण करता है तथा अपने व्यक्तित्व को विकास पथ पर अग्रसर करता है। मानव के मूल्य में मनुष्य की अवधारणा विचार विश्वास मनोवृत्ति आस्था या निष्ठा आदि जैसे मानवीय गुणों का समावेश होता है। यह मानव मूल्य एक और व्यक्ति के अंत:करण द्वारा नियंत्रित होते हैं तो दूसरी ओर इनके द्वारा उसकी संस्कृति एवं परंपरा क्रमशाह विस्तृत एवं परिभाषित होती है।

> वसुधैव कुटुंबकम्, सर्वे भवन्तु सुखिन: एवं बहुजनहिताय"

मानवीय मूल्यों की कसौटी मानी जाती है जो मानवीय मूल्यपरक अवधारणा है। इसमें सामान्य रूप से उन सभी मूल्यों को समाहित किया जाना चाहिए जो कि मनुष्य के सर्वांगीण विकास से संबंध रखते हैं।

> यदि इन मूल्यों को समझने का प्रयास किया जाए और साधारण भाषा में व्यक्त करें तो राष्ट्रीयता, नैतिकता,मानवीयता और आत्म-स्वाभिमान ही वास्तविक जीवन-मूल्य है। जो हमारे समाज के आत्मोत्थान के लिए अति आवश्यक है। वास्तव में ये ही शाश्वत जीवन मूल्य हैं। इन जीवन मूल्यों का संरक्षण करना ही मानव जीवन का परमावश्यक धर्म है।

भारतीय मनीषियों ने तप ,त्याग, सेवा और साधना से जिस अनुकरणीय पद का अनुगमन किया और परिणाम स्वरूप उन्हें जो नवीनता प्राप्त हुई, वही यहां के दार्शनिक आधार के रूप में विद्यमान है। भारतीय सभ्यता का संपूर्ण जीवन - दर्शन, धर्म, साहित्य, कला, रीति-रिवाजों और सामाजिक परंपराए आदि, यह सभी इसी दार्शनिक आधार पर ही विकसित हुए हैं । इन्हीं तत्त्वों से भरपूर यहां का समग्र चारित्रिक जीवन रूप वट-वृक्ष और इसकी शाखाएं, प्रशाखाएं व पत्र, पुष्प, फल इसी दर्शन रूपी सशक्त सजीव मूल पर ही आधारित एवं तदनुरूप ही प्रसरित है।

एक स्वस्थ समाज के निर्माण में भारतीय जीवन मूल्यों के इसी दार्शनिक पहलू को प्रयोग करके सदैव एक विकासशील प्रक्रिया का प्रयोग होता रहा है।

एक मुख्य बात जो भारतीय जीवन मूल्यों में हमेशा देखने को मिलती है वह है–

> बाह्य की अपेक्षा आंतरिक भावना का अधिक महत्त्व है अर्थात देह की अपेक्षा प्राण व आत्मा अधिक महत्त्वपूर्ण है। जैसे वस्त्रों का स्वच्छ होना तो अच्छा है; परंतु अपेक्षाकृत उन वस्त्रों को धारण करने वाले का हृदय अधिक महत्त्व रखता है।

वर्तमान में मूल्यों के मुरझाने की भयावह स्थिति को प्राप्त होता हम सबका जीवन, किन-किन कारणों से प्रभावित होकर समाज में इस दयनीय दशा की ओर बढ़ रहा है। क्या यह चिंतन व मनन करने योग्य तथ्य नहीं है?

मुरझाते जीवन मूल्यों के मुख्य कारण

- वर्तमान परिवेश में संयुक्त परिवार का विघटन
- एकाकी परिवार एवं पश्चिमीकरण
- शिक्षा पाठ्यक्रमों में महापुरुषों की जीवनी का अभाव
- नैतिक शिक्षा संबंधित कहानी, खेल ,नाटक आदि कार्यक्रमों का अभाव
- बालकों को महंगे उपकरण या भौतिक संसाधनों के स्थान पर संस्कारों की सौगात देने का अभाव
- जिन बच्चों को बचपन से ही शाश्वत मूल्य आधारित संस्कारों जैसे सत्य बोलना, सहयोग, दया, निष्पक्षता, आज्ञा पालन, राष्ट्र भावना, समयबद्धता, सहिष्णुता, करूणा आदि मानवीय मूल्यों की शिक्षा दी जाती हैं; बाद में चलकर वही शाश्वत मूल्य आधारित गुण पुष्पित, पल्लवित व विकसित होकर सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं

मुरझाते जीवन मूल्यों के प्रतिरक्षण हेतु मुख्य उपाय

- वर्तमान में देश भ्रष्टाचार लैंगिक पूर्वाग्रह, यौन-दुष्कर्म व आर्थिक, सामाजिक व नैतिक अपराध पर रोक लगाने के लिए तत्काल उपायों में कठोर से कठोर कानून- व्यवस्थाओं पर आधारित नियमों में संशोधन किया जाए।
- पुलिस व्यवस्था में शाश्वत मूल्यों की शिक्षा में अधिक बल देते हुए सुधार व अनुकरणीय आचरण की आवश्यकता सम्मिलित कर,सुधार की ओर एक महत्त्वपूर्ण कदम बढ़ाया जा सकता है।
- दीर्घकालिक सुधार तो केवल औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा व्यवस्था में शाश्वत जीवन मूल्य आधारित सांस्कृतिक व सामाजिक मूल्यों के समावेश द्वारा ही संभव हो सकता है।
- सभी नकारात्मक आचरणों को कम करने में सिर्फ श्रेष्ठ संस्कारिक व प्रारम्भिक स्तर पर सामाजिक शिक्षा प्रणाली जो बचपन से ही बालकों के जीवन का एक आवश्यक अंश बनाने वाली व्यवस्था द्वारा ही परिवर्तित कर एक स्वस्थ समाज का निर्माण किया जाना संभव हो सकता है।
- एक कटु सत्य जो सर्वविदित है कि जब-जब सामाजिक वातावरण में गिरावट आती है, तब-तब संस्कृति के सर्वोत्कृष्ट फूल सबसे पहले मुरझाते हैं अर्थात शिक्षण संस्थानों की इस सब के पीछे महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
- वास्तव में सबसे पहले स्वार्थी शिक्षण-संस्थानों के परिवर्तित रूप को अच्छी तरह समझते हुए ,फिर उन्हें सुधार कर जीवन मूल्यों को पोषित किया जाए।
- आज समाज का बदलता रूप-धर्म, संस्कारों के ढीले पड़ते बंधन, असमंजस व भ्रम की स्थिति, नीति-रीति पर कमजोर पकड़ और मर्यादा का जो ताना-बाना चरमरा गया है ,उस में स्वार्थी शिक्षण-संस्थानों के कारण जो खोखलापन शिक्षा में आया है। उसकी मरम्मत कर नवयुग का निर्माण आज की महती आवश्यकता है।

डॉ एपीजे अब्दुल कलाम

"नैतिक मूल्य संबंधी सही शिक्षा से समाज और देश की उन्नति होगी।"

अध्ययन क्षेत्र

जीवन मूल्यों के अध्ययन के लिए हमारे आसपास में रहने वाले हमारे सभी रिश्तेदार, संबंधी, पड़ोसी व संपूर्ण समाज ही अध्ययन क्षेत्र में आ जाता है। हमें कहीं और जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। हम अपने आसपास और इर्द-गिर्द रहने वाले लोगों

के बीच में शाश्वत मूल्यों का अध्ययन सरलता से कर सकते हैं।

जीवन मूल्यों की शिक्षाओं के प्रभाव को अति सुक्ष्मता से अध्ययन करने का प्रयास, कुछ भगवद् गीता पाठकों और गैर भगवद् गीता पाठकों के मध्य किया गया।

श्रीमद्भागवत गीता पाठक और गैर भागवत गीता पाठकों के बीच किया गया एक ऐसा प्रयोग, जो शाश्वत जीवन मूल्यों की शिक्षाओं के प्रभाव को सूक्ष्मता से समाज के सामने मानवीय संवेदनाओं का बाह्य और आंतरिक दर्शन प्रस्तुत करता है।

(मनोविज्ञान विभाग, प्रशांत विश्वविद्यालय, उदयपुर राजस्थान) द्वारा किया गया एक प्रयोगात्मक विश्लेषण

श्रीमद्भागवत गीता पाठक और गैर भगवत गीता पाठकों की मनोवैज्ञानिक स्थिति को आधार बनाकर उनकी भावनात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन, संघीय तकनीक एवं प्राप्त मात्रात्मक डेटा का विश्लेषण विंडोज माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल की मदद से किया गया।

(जिसमें 100 छात्र श्रीमद्भागवत गीता पाठक लिए गए थे और 100 छात्र गैर भगवद गीता पाठक लिए गए थे। इस प्रयोग में सम्मिलित किये गए छात्रों की आयु लगभग 19 वर्ष से 21 वर्ष के मध्य थी)

यह अध्ययन भारत के उत्तराखंड राज्य के देहरादून जिले में आयोजित किया गया था। इस अध्ययन में शामिल समुह के सदस्यों में -- (डॉक्टर यशवीर सिंह, डॉक्टर महेश भार्गव द्वारा भावनात्मक परिपक्वता स्तरीय अध्ययन किया गया)

(डॉक्टर आर के ओझा द्वारा मूल्यों का अध्ययन किया गया)

E.M. भावनात्मक परिपक्वता Emotional Maturity

E.P. भावनात्मक प्रगति Emotional Progress

S.A. सामाजिक समायोजन Social Adjustment

P.I. व्यक्तित्व एकता Personality Integration

I. स्वतंत्रता। Independence

तालिका 1: भावनात्मक परिपक्वता आधारित आंकड़ों का विश्लेषणात्मक प्रदर्शन

समूहों के नाम	भावनात्मक परिपक्वता स्तर				
	E.M	E.P	S.A	P.I	I
भगवत गीता पाठक	17.05	17.2	14.5	14.45	12.95
गैर भगवत गीता पाठक	27.18	26.35	26.2	25.35	24.35

तालिका 2: भावनात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन गैर भागवत गीता पाठकों और भागवत गीता पाठकों के मध्य 't' द्वारा प्रदर्शित

समूहों के नाम	माध्य	एस. डी	"" मान 't'
गीता पाठक	76.15	3.28	
			9.80
गैर गीता पाठक	129.5	10.18	

0.05 और 0.01 के महत्व के स्तर पर महत्वपूर्ण 't' प्राप्त किया गया है।

अन्य मूल्यों के आंकड़ों का विश्लेषण औसत आधार पर प्रदर्शन

तालिका 3

समूहों के नाम	सौन्दर्य संबंधी मूल्य	सामाजिक मूल्य	धार्मिक मूल्य
गीता पाठक	4.69	4.03	52.40
गैर गीता पाठक	31.35	41.60	37.90

't' मान			
	10.35	3.31	11.57

उपरोक्त तालिका -- 3 में 't' के मान द्वारा अलग-अलग जीवन मूल्यों का मापन किया गया है।

नोट- यहां आंकड़ों पर आधारित अध्ययन के लिए उपयोग में लाया गया पैमाना एक अवरोही (उल्टा) पैमाना है। इसलिए तराजू पर उच्च स्कोर अपरिपक्वता की उच्चतम भावना को दर्शाता है; जो गैर भागवत गीता पाठकों के परिणामों द्वारा परिलक्षित होता है अर्थात जितना उच्च मान/आंकड़े उतनी ज्यादा अपरिपक्वता की भावना उन समुहों में देखने को मिलती है।

तालिका-1 में भावनात्मक परिपक्वता पैमाने के विभिन्न आयामों पर प्राप्त आंकड़ों द्वारा जीवन मूल्यों को दिखाया गया है।

श्रीमद्भागवत गीता पाठकों ने...

- E.M. / (Emotional Maturity Scale) / भावनात्मक परिपक्वता पर 17.05 मान प्राप्त होता है।
- S.A. / (Social Adjustment) / सामाजिक समन्वय के 14.5 का मान प्राप्त होता है।

गैर श्रीमद्भागव गीता पाठकों ने....

- E.M. / (Emotional Maturity Scale) / भावनात्मक परिपक्वता पर 27.15 मान प्राप्त किया है।

- S.A. / (Social Adjustment) / सामाजिक समन्वय के लिए 26.2 का मान प्राप्त किया।

तालिका-1 के माध्यम से गैर भगवत गीता पाठकों द्वारा भावनात्मक परिपक्वता पैमाने के विभिन्न आयामों पर प्राप्त उच्च मूल्य स्पष्टीकरण प्रकट करते है कि जितना उच्च स्कोर उतनी ज्यादा अपरिपक्वता गैर भागवत गीता पाठकों में देखने को मिलती है।

E.M. / Emotional Maturity / भावनात्मक परिपक्वता के लिए प्रयुक्त पैमाने में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्ति द्वारा दिखाए गए परिपक्व स्वभाव का स्तर दर्शाता है। भागवत गीता पाठक हठ, ईर्ष्या, क्रोध, बुरे स्वभाव आदि भावनाओं से मुक्त होते हैं। अतः आंकड़ों द्वारा भी यही प्रदर्शित होता है कि गैर भगवत गीता पाठकों में इन गुणों (हठ, ईर्ष्या, क्रोध, बुरे स्वभाव आदि भावनाओं) की अधिकता पाई जाती है।

- E.P./ Emotional Progression/ भावनात्मक प्रगति 26.35 यह अपरिपक्वता का यह उच्चतम मान जीवन के एक विशेष भाग में असफलता की स्वीकृति क्षमता को प्रदर्शित करता है। भावनात्मक प्रगति का यह निम्न मान 17.2 भगवत गीता पाठकों के स्थायित्व को प्रदर्शित करता है कि परिपक्वता का स्थाई भाव व्यक्तित्व में कितना उच्च स्तर तक समाहित है। जबकि गैर भागवत गीता पाठकों में E.P. का उच्च मान/स्कोर बताता है कि उनमें इन गुणों का अभाव है।
- S.A./SocialAdjustment/सामाजिक समन्वय पर प्राप्त किए गए 14.5 मान/आंकड़ों से पता चलता है कि भागवत गीता पाठकों में आत्म मूल्यांकन के गुण भरे पड़े हैं; वहीं दूसरी ओर गैर भागवत गीता पाठकों के 26.2 मान/आंकड़ों के आधार पर ज्ञातव्य है, कि इनमें आत्म मूल्यांकन के गुणों की कमी पाई गई। सामाजिक और सामयिक होने के नाते भागवत गीता पाठकों के स्वभाव में दया और विचारशीलता का महत्वपूर्ण गुण प्रदर्शित होता है।
- P.I. / Personality Integration / व्यक्तित्व एकता के लिए प्राप्त आंकड़ों के अनुसार भगवद् गीता पाठकों के निम्न मान 14.45 अर्थात वसुधैव कुटुंबकम् की भावना से ओत-प्रोत का आचरण पाया जाना ही भावनात्मक परिपक्वता का स्थायित्व झलकाता है, वहीं गैर भगवत गीता पाठकों में उच्चतम मान 25.35 के आधार पर हम एकाकी परिवारों की अधिकता और संयुक्त परिवारों का विघटन दर्शाता है कि भावनात्मक अपरिपक्वता वर्तमान परिवेश में अत्यधिक स्तर पर दिखाई देती है।
- I./Independence/स्वतंत्रता के लिए प्राप्त आंकड़ों के अनुसार भगवत गीता पाठकों में 12.95 मान प्राप्त कर भावनात्मक परिपक्वता का एक ऐसा वैचारिक जिज्ञासा, ज्ञान -विज्ञान, ईश्वर प्राप्ति व लोक कल्याण हेतु कार्य निर्णय लेने की स्वतंत्रता स्थाई रूप से देखने को मिलती है, वही गैर भगवत गीता पाठकों में उच्चतम मान 24.35 प्राप्त किया गया है जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि श्रीमद्भागवत गीता को ना पढ़ने वाले मनुष्यों में स्वतंत्रता स्वरूप मतलब पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव जैसे मदिरा सेवन आदि अनेक व्यसनों में पड़ जाना है । वर्तमान में स्वतंत्रता का दुरुपयोग समाज में चारों ओर व्याप्त है।

भारतीय मान्यता है कि मानव जीवन मूलतः दिव्य प्रभु का अंश या स्वरूप है। अपने जीवन को पूर्ण सार्थकता में विकसित कर उस दिव्यता में परिणित करना, यही भारतीय सनातनी मानव जीवन का अंतिम उद्देश्य स्वीकार किया गया है।

पश्चिमी सभ्यता के चिंतनानुसार 'जीव मूलतः ना अच्छा है ना बुरा है' उसे चाहे जैसे बनाया जा सकता है- भारतीय चिंतन से यह कथन मेल नहीं खाता है। वस्तुत: यह मानव जीवन दिव्य प्रभु की दिव्यता में परिणत करने के लिए ही प्राप्त हुआ है। यही विश्वास भारतीय आध्यात्मिकता की आधार धरा है। भारतीय जीवन मूल्यों को जानने के लिए उनके आधार को समझना अति आवश्यक है। वस्तुत: इन मानव मूल्यों का आधार पुराणों में अंतर्निहित सत्य एवं महान आत्माओं का अनुभूति सत्य मार्ग एवं सदाचरण ही है। अन्यत्र कहा है- "महाजनो येन गत: स पन्था:" महान पुरुषों द्वारा अपनाए गए मार्ग का अनुसरण करना ही उचित मार्ग है। इस प्रकार अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि मानव मूल्यों को प्रश्रय देना ही उचित लक्ष्य बताया गया है। संकटग्रस्त स्थिति में भी मानव मूल्यों में जो पुराणों के अनुसार परम ज्ञान आधारित मार्ग प्रशस्त किया गया है , उसी मार्ग पर सक्रिय और सशक्त रहकर व्यक्ति को संकट की स्थिति से उबारने में सहायता मिलती है।

उद्देश्य

शोध में वर्णित मानव जीवन मूल्यों की सकारात्मक सोच के प्रभाव द्वारा वर्तमान युग में उपयोगिता सिद्ध करने का प्रयास किया गया है।

> "धर्म का छोटे से छोटा अंश मानव को बड़े से बड़े डर से मुक्त करा देता है।"

- वर्तमान में मानव मूल्यों पर आधारित शिक्षाओं में कमी के कारण उत्पन्न समस्याओं का समाधान सरलता पूर्वक किया जा सकता है।
  यदि श्रीमद्भागवत गीता में वर्णित मानव मूल्यों को पुनर्स्थापित किया जाए।
- श्रीमद्भागवत पुराण कालीन एवं वर्तमान कालीन स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण, वर्तमान समय में उपादेयता सिद्ध आयामों का वर्णन समाज को एक सुमार्ग की ओर अग्रसर करता है।
- शोध द्वारा मानव जीवन सद्ववृत्त युक्त बनाना ही एकमात्र उद्देश्य है।
- श्रीमद्भागवत गीता में वर्णित मानव-मूल्य-परक शिक्षाओं को पुनर्स्थापित करना एवं नवव्यवहार को लोक कल्याण हेतु सिद्धांतिक रूप में प्रतिपादित करना। समाज में चारों ओर व्याप्त समस्त जीवों को स्वधर्म और मानव जीवन सार्थकता प्राप्त करने में सहायक होगा।

वर्तमान समय में जीवन मूल्यों के अभाव का प्रभाव और भविष्योन्मुखी शाश्वत जीवन मूल्यपरक अवधारणा

सूक्ष्मता से आकलन करने पर वर्तमान में उत्पन्न समस्याएं वास्तविकता में हमारे ही द्वारा किए गए कर्मों के फल स्वरुप ही व्याप्त है। चारों ओर विभिन्न प्रकार की भयंकर समस्याओं से आधुनिक विश्व संघर्ष कर रहा है जैसे युद्ध व आतंकवाद की स्थिति, अलगाववाद, हिंसा, महामारी इत्यादि। भारतीय संस्कृति में सदैव मनुष्य के चरित्र-निर्माण पर अत्यधिक बल दिया जाता रहा है। आचार-विचार, मानव-विज्ञान और मानव-धर्म के विकास की अद्भुत पहल निरंतर सतत प्रक्रिया के रूप में भारतीय संस्कृति की प्राचीनकालीन विशेषतम् व्यवस्था रही है।

भारतीय प्राचीन दर्शन में धर्म परंपराएं और मानवीय आचरण मुख्य रूप से मन की संतुष्टि और आध्यात्मिक सुख-समृद्धि पर जोर देते रहे हैं। वर्तमान स्थिति में जब विश्वव्यापी समस्याएं भयंकर रूप ले चुकी है। उस सब के बावजूद भी कोई संदेह नहीं है कि शांति और सहनशीलता के स्तर पर आज भी भारत का योगदान विश्व में

सबसे अधिक महत्व और उच्च स्तर पर पाया जाता है।

प्राकृतिक अनुकूलता और सृष्टि में प्रतिपादित सभी तरह की की व्यवस्थाएं, साथ ही उन में होने वाले कालांतर परिवर्तन मानव मात्र की पारस्परिक निर्भरता और अन्योन्ता को दर्शाती है। अतः शाश्वत मूल्यों को ही एक विकसित व शांतिपूर्ण समाज तथा सुव्यवस्थित संसार की संरचना का आधार बनाया जा सकता है।

- मानवीय समाज समानता व न्याय पर आधारित हो। अवसर की समता हो, जिसका अभिप्राय है- उन सभी बाधाओं को दूर करना जिनके द्वारा व्यक्तिगत विश्वास और आत्मविश्वास में बाधा उत्पन्न होती हो। मतलब साफ है कि सामाजिक स्थिति, पारिवारिक संबंध व सामाजिक पृष्ठभूमि ऐसे ही अन्य कारक रूपी बाधाओं का हस्तक्षेप समानताओं व न्याय पर हावी नहीं होने देना चाहिए।
- किसी भी प्रकार के शोषण का प्रतिरोध सर्वत्र व सदैव होना चाहिए। शोषण अनेक प्रकार के हैं, जैसे बौद्धिक, मानसिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूपों में दिखेंगे। प्राचीन काल से ही शोषित कृत्य समाज में विद्यमान रहे हैं और स्वतंत्रता के इन सात दशकों के बाद भी संवैधानिक, सामाजिक, राजनैतिक सुधारोन्मुख अनेकों प्रयासों के बावजूद भी भारत आज भी पूरी तरह से समग्र रूप में शोषण मुक्त नहीं हो पाया है । जिसका एकमात्र मुख्य कारण मानव जीवन मूल्यों का मनुष्य के आचरण में अभाव है।
- विविधता मानव का हमेशा मन मोह लेती है। प्रकृति का मूल आकर्षण समस्त संसार में कभी भी एक ही प्रकार की जीवन-शैली या विचारधारा का प्रचलित नहीं हो पाना और भविष्य में भी इसकी संभावना नहीं है।

कुछ लोग अपने मत को सर्वश्रेष्ठ बताते हुए दूसरों पर इसे थोपना चाहते हैं तथा अपनी ही तरह का जीवन व जीवन-शैली के अनुसार ही विश्व का निर्माण करने के लिए प्रयासरत रहते हैं और इन सब प्रयासों को करते समय हिंसा और आतंकवाद का सहारा लेने से भी पीछे नहीं हटते। उन्हें वास्तव में प्रकृति और मानव का स्वभाविक सत्य पता ही नहीं होता है।

वास्तव में विश्व और संपूर्ण मानवता का अनुभव बहुत ही स्पष्ट रहा है कि उच्चतम बौद्धिक शिक्षा के बावजूद भी विश्व में कितने ही घोरतम अधार्मिक, हिंसक एवं असहिष्णु व्यक्ति उत्पन्न होते रहे हैं।

आज भी विश्व में अधार्मिक तथा असहिष्णु आंदोलन से उत्पन्न होने वाले आतंकवाद, धरना, प्रदर्शन व आंदोलनों से उत्पन्न अव्यवस्थित स्थिति अर्थात समाज में चारों ओर व्याप्त अनेक समस्याओं से उत्पन्न विषाद को लेकर समस्त संसार में ऐसे अनेक उदाहरण देखने को मिल जाएंगे। ये वे लोग हैं, जो आतंकी घटनाओं के माध्यम से पूरे समाज को और विश्व में अलग-अलग स्थानों पर हजारों व लाखों निर्दोष नागरिकों की हत्याओं के दोषी होते हुए भी स्वयं को ईश्वर का उपासक घोषित करते रहते हैं और संपूर्ण विश्व में अपने ही बनाए गए धर्म नियमों पर आधारित घोर अवैज्ञानिक तथा मानवीय व्यवस्था को स्थापित करना चाहते हैं। इस प्रकार के पथभ्रष्ट लोग जो मानव धर्म व जीवन मूल्यों से अनजान है, इन लोगों को मानव मूल्य आधारित ज्ञान दिए जाने की आवश्यकता है।

- संपूर्ण मानव जाति को इस अज्ञान के घनघोर अंधेरे से बाहर निकालने के लिए, मानव का चरित्र निर्माण जो पूर्णतया आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित हो तथा इस परिवर्तन के द्वारा ही अनंत दुख, तनाव तथा अन्य क्लेशों का सदा के लिए अंत संभव है।

- आज के भौतिकवादी मनुष्य ने दुर्भाग्यवश धर्म के अनुपालन में ईश्वर और प्रकृति से संबंध तो अवश्य स्थापित कर लिया है, किंतु ईश्वर के साथ संबंध में मनुष्य ने प्रभु से प्रेम को महत्व ना देकर लोभ व लालच के तत्व को अधिक महत्व दे दिया है।
- श्रीमद्भागवत गीता में दुख से मुक्ति का एक ही उत्तम उपाय बताया गया है --निष्काम कर्म योग।
- श्रीमद्भागवत गीता में मानव विज्ञान और मनोविज्ञान को युगो पूर्व ही शाश्वत मूल्यपरक शिक्षाओं को बहुत ही सुंदर व उदाहरण सहित समझाया गया था। साथ ही प्रत्येक काल में अनेक महापुरुषों ने भी शाश्वत मूल्यों के आधार पर व्यक्तिगत व सामूहिक जीवन का काल- सुसंगत आचार-विचार को भी अपने शब्दों में समाज के समक्ष रखा है।

वास्तव में आज ऐसे ही श्रेष्ठ एवं आदर्श विचारों को व्यवहार में लाने की अत्यंत आवश्यकता है, जो सिर्फ जीवन मूल्यों को आचरण में परिवर्तित करके ही संभव है। कथनी और करनी में अंतर के रहते एक सुसंगत, सुगठित एवं आदर्श समाज की स्थापना कदापि संभव नहीं होगी।

- आज जीवन मूल्यों का अस्तित्व अर्थहीन हो रहा है। मानवीय संवेदनाएं लुप्त होती जा रही हैं। जब समाज में मानवता की रोशनी क्षीण होने लगती है तो चारों ओर अंधकार-ही-अंधकार फैलने लगता है। आज इसी मानवता के क्षरण के कारण ही देश-विदेशों में अनेक प्रकार की समस्याएं, अन्याय, युद्ध और हिंसा की स्थिति दिखाई दे रही है। जीवन मूल्यों के दीपक की रोशनी बुझने की कगार पर है, मानवतारहित समाज में व्यक्ति को भले-बुरे, कर्तव्य-अकर्तव्य, सार-असार, पवित्रता-अपवित्रता का ज्ञान नहीं रहा। आज पूरा विश्व इन्हीं कारणों से त्रस्त है। प्रत्येक व्यक्ति सिर्फ अपने लिए ही सुख की कामना करता है और दूसरे के विषय में तो सोचना ही नहीं चाहता है। अतः जब तक आंतरिक स्तर पर बदलाव नहीं आएगा तब तक हमें कोई भी स्थाई समाधान इन वर्तमान समस्याओं की समाप्ति हेतु मिलना असंभव है ।
- वास्तव में पश्चिम की भोगवादी संस्कृति का अंधाधुंध अनुसरण करके हमारे समाज ने अपने लिए ही विनाश के बीज बो डाले हैं। आज वर्तमान के हालात कुछ ऐसे हैं कि जब एक औसत भारतीयजन के सामने भारत की संस्कृति, मूल्य एवं राष्ट्रीय उपलब्धियों की कोई आलोचना या वाद-विवाद करता है तो वह या तो मौन साध लेता है या फिर स्वयं भी आलोचकों की ही भाषा बोलने लगता है।
- मूलतः भारतीय जीवन दर्शन गीता द्वारा प्रतिपादित जीवन शैली का दर्शन है ।अनेक विद्वानों और महापुरुषों ने कर्मयोग को भारतीय जीवन दर्शन का आधार माना है। भारतीय मनीषियों, विद्वानों के अनुसार श्रीमद्भागवत गीता एक धार्मिक ग्रंथ नहीं था। दुर्भाग्यवश भारत में भी कतिपय कारणों के चलते कुछ व्यक्तियों द्वारा राष्ट्रीय गौरव एवं चिंतन के इस प्रतीक की अवहेलना होती रही है।
- यह हमारे भारत क्या संपूर्ण विश्व के लिए भी एक विडंबना ही है कि इस पृथ्वी लोक में हजारों वर्षों पहले श्रीमद्भागवत गीता के निष्काम कर्म योग का उद्भव हुआ, परंतु आज वही भारतीय युवा स्वयं के आचरण में गीता में वर्णित जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षा को अपने आचरण में उपयोग नहीं करते हैं, बल्कि ठीक उसके विपरीत कार्य करते हुए नजर आ रहे हैं; यह स्थिति भारत के लिए शुभ नहीं है।

- स्वामी विवेकानंद, तिलक, भगत सिंह, लाला लाजपत राय, मदन मोहन मालवीय आदि अनेक राष्ट्रभक्त यदि आज जीवित होते तो निश्चय ही वे देश को ऐसा चेतना विहीन और मानव मूल्यों का अभाव ना होने देते।

भोगवादी संस्कृति के अंधानुकरण को त्याग कर वापस अपनी ही सनातन संस्कृति को अपने आचरण में समाहित करना होगा। शाश्वत मूल्यों में तेजी से जो क्षरण हो रहा है, उसकी गति पहले धीमी होगी, फिर धीरे-धीरे समाप्ति की ओर अग्रसर हो जाएगी। आज नैतिक मूल्यों पर आधारित बात यदि किसी बुजुर्ग व्यक्ति द्वारा कही जाती है तो कोई भी मानने को तैयार ही नहीं है। बुजुर्गों से सीख लेने की उपेक्षा या अपने प्राचीन ग्रंथों को पढ़ने-लिखने में अरूचि, समाज से अनुपयोगी और बोझ समझकर दरकिनार कर दिया गया एक ऐसा शाश्वत मूल्यों पर आधारित ज्ञान; जिसका सबके जीवन में समाहित होना अति आवश्यक है, आधुनिक समाज में युवा पीढ़ी की त्रासदी कुछ यह ऐसी बन गई है कि आर्थिक समृद्धि से जुड़ी उपलब्धियां मात्र इस पीढ़ी के लिए जीवन का लक्ष्य बन कर रह गई है। आज इन युवा बच्चों के बीच में धर्म, अध्यात्म और नैतिकता की चर्चा उतना रुचिकर विषय नहीं है, जितना कि गेम पर चर्चा करना रुचि का विषय बन गया है। वर्तमान समय की त्रासदी को देखते हुए हमें आचरण शुद्धि द्वारा ही नैतिकता का विकास करना अत्यंत आवश्यक है। वस्तुतः जीवन मूल्य तथा नैतिक आचरण का पालन ही सच्चे धर्म का प्रतीक है।

निष्कर्ष

सुक्ष्मता से अध्ययनोपरांत ज्ञात होता है कि मानव मूल्यों पर शोध तो किए गए हैं, परंतु श्रीमद्भागवत गीता में वर्णित मानव मूल्यों से संबंधित शोध बहुत कम विकसित किए गए हैं। इस प्रकार श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित मानव मूल्यों पर शोध के प्रभाव से मानव जीवन को सरल बनाने का अपेक्षित प्रयास संभव होगा। वर्तमान समय में मूल्य आधारित शोध एवं शिक्षा प्रणाली में जो भी त्रुटियां है और इन त्रुटियों के कारण जो भी समस्याएं जनमानस के जीवन में उत्पन्न हो चुकी हैं, उन सब समस्याओं के समाधान हेतु ये शोध प्रभावशाली उपकरण साबित होंगे। कर्तव्य और दायित्व ज्ञान के बौद्धिक विकास द्वारा संपूर्ण मानव मूल्यों का विकास संभव हो सकता है। प्रतिदिन मानव जीवन में होने वाले द्वंद्वात्मक चिंतन से मुक्ति और श्रीमद्भागवत गीता में वर्णित मानव मूल्यों पर आधारित ज्ञान द्वारा वर्तमान युग में सामाजिक, धार्मिक, भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक वातावरण को विकसित करने में प्रभावकारी सिद्ध होगा। इसीलिए शिक्षक और छात्रों द्वारा एवं शिक्षण-प्रशिक्षण से जुड़े समर्पण के साथ अध्यापन द्वारा आत्मनियंत्रित, निस्वार्थ, आत्म साक्षात्कार और भावनात्मक परिपक्वता का मार्ग विकास के साथ-साथ समाज में अवश्य प्रतिपादित होगा।

मुरझाते मानव मूल्यों की वर्तमान समस्या के समाधान में मूल्य निष्ट समाज और व्यक्तिगत विकसित व्यवस्था के निर्माण के लिए आज एक प्रभावी मूल्य शिक्षा की व्यवस्था होनी अति आवश्यक है।

एस०वी० चौहान समिति की रिपोर्ट में भी लगभग सभी शैक्षणिक सुधारों पर विचार करने के लिए गठित (1996) समिति के सदस्यों में राधाकृष्णन, कोठारी, राममूर्ति, केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड समिति और मूल्योन्मुख शिक्षा के लिए योजना आयोग के कोर ग्रुप की रिपोर्टों का भी अध्ययन किया गया। इन सभी समितियों ने शिक्षा पद्धति को तत्काल मूल्योन्मुख बनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

संसद (1999) में एस०वी० चौहान समिति की रिपोर्ट को भी निर्विरोध स्वीकार किया।

वर्तमान में (2020-21) अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ द्वारा भी शिक्षा मंत्रालय प्रमुख को एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया, जिसमें शिक्षा पाठ्यक्रमों में हो रही त्रुटि और जीवन मूल्यों पर आधारित पाठ्न सामग्री की कमी के कारण समाज में जो समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं, उन सब का आधार प्रारंभिक शिक्षा में जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षा का अभाव भी एक कारण है। अतः शिक्षा मंत्रालय प्रमुख को इस समस्या के समाधान के रूप में मूल्यपरक शिक्षा को प्रारम्भिक स्तर से ही शिक्षा में सम्मिलित किया जाये, इस तथ्य पर बल दिया गया है। अतः इस भयावह परिस्थिति पर आत्म-चिंतन अनिवार्य है। कहीं ना कहीं से कोई अदृश्य संचालित और सोची-समझी चाल भी हो सकती है। जिसका उद्देश्य हमारी ताकत (युवा-शक्ति) जो देश का भविष्य है, उनके सामने शिक्षा के माध्यम से बार-बार जो सही को गलत और हर वो चीज जो गलत है, उसे सही दिखाने पर पुरजोर कोशिश क्यों हो रही है? कौन है? जो यह सब करा रहा है। यह भी एक विचारणीय तथ्य है, जिसे नकारा नहीं जा सकता है। वास्तव में देखा जाए तो मूल्यों के आधार पर शिक्षा संस्कारों की सबसे अधिक जिम्मेदारी माता-पिता, घर-परिवार जनों एवं शिक्षकों की होती है। परंतु यह भी उतना ही कड़वा सत्य है कि मानव-मूल्यों की शिक्षा खाली-पीली में एक दूसरे को ज्ञान बांटने से नहीं पोषित नहीं होने वाली है, ना ही नैतिक-शिक्षा की कहानी-किताब आदि पढ़ने से समाज में पूर्ण रूप से परिवर्तन लाया जा सकता है, बल्कि यह परिवर्तन तभी संभव है, जब हमारा पूरा माहौल और हम सभी परिवारजनों का आचरण एवं सत्कर्म से पोषित कार्य हम स्वयं करेंगे तो आने वाली पीढ़ी भी हमें-तुम्हें देखकर ही यह संस्कार ग्रहण करेगी, तभी जीवन मूल्यों को मुरझाने से बचाया जा सकता है या पुनर्जीवित किया जा सकता है। तब ही युवा पीढ़ी में संस्कार, नैतिकता व शिष्टाचार की झलक पूर्ण रूप से पोषित हो पाएगी।

संदर्भ सूची

1. विष्णु पुराण--डॉ रामचंद्र वर्मा शास्त्री प्रकाशन -धर्म ग्रंथ प्रकाशन दिल्ली (1980)
2. रघुवंश--कालिदास--डॉ रामचंद्र वर्मा शास्त्री प्रकाशन-कला मंदिर दिल्ली- 6 (1977)
3. पौराणिक धर्म एवं समाज--सिद्धेश्वरी नारायण राय, प्रकाशन-पंचनद पब्लिकेशन इलाहाबाद-2, (1968)
4. व्यक्तिविवेक--महिमभट्ट, मधुसूदन शास्त्री, चौखंबा प्रकाशन बनारस [1936]
5. भारतीय संस्कृति कोश--शर्मा लीलाधर, राम लाल एंड संस दिल्ली बलिया (1976)
6. धर्म का उद्भव और विकास --शर्मा, तुलसीराम, भारतीय विद्या प्रकाशन वाराणसी (1984)
7. हिंदू गॉड्स एंड गोडैसस--रोज़ एच०ए०,अमर प्रकाशन, दिल्ली [1961]
8. भक्ति-भक्त-भगवान--श्री जयदयाल गोयंदका जी, गीता- प्रेस
9. वैदिक देव शास्त्र -- डॉ सूर्यकांत, मेहरचंद लक्ष्मणदास, दिल्ली (1982)
10. पुराणों में वंशानुक्रमिक कालक्रम इतिहास--विद्या प्रकाशन दिल्ली (1989)
11. रामायण के कुछ आदर्श पत्र--श्री जय दयाल गोयन्दका जी, गोरखपुर
12. श्रीमद्भागवत पुराण--गीता प्रेस गोरखपुर
13. श्रीमद्भागवत महापुराण--गीता प्रेस गोरखपुर